॥ नारायण सूक्तम ॥

ओम सहना ववतु
सहनौ भुनक्तु
सह वीर्यम करवावहै
तेजस्विनावधीतमस्तु
मा विद्विशावहै
ओम शान्ति: शान्ति: शान्ति:

सहस्र शीर्शम देवम विश्वाक्शम विश्व शम्भुवम
विश्वम नारायणम देवमक्शरम परमम पदम
विश्वत: परमान्नित्यम विश्वम नारायणग्म हरिम
विश्वमे वेदम पुरुशस्तद्विश्व-मुपजीवति
पतिम विश्वस्य आत्मेश्वरग्म शाश्वतग्म शिव-मच्युतम
नारायणम महाग्नेयम विश्वात्मानम परायणम
नारायणपरो ज्योतिरात्मा नारायण: पर:
नारायण परम ब्रह्म तत्त्वम नारायण: पर:
नारायण परो ध्याता ध्यानम नारायण: पर:
यच्च किन्चिज्जगत्सर्वम द्रुश्यते श्रूयते˜पि वा ॥
अन्तर्बहिश्च तत्सर्वम व्याप्य नारायण: स्थित:
अनन्तमव्ययम कविग्म समुद्रे˜न्तम विश्व शम्भुवम
पद्मकोश प्रतीकाशग्म ह्रुदयम चाप्यधोमुखम
अधो निश्टाया वितस्त्यान्तॆ नाभ्यामुपरि तिश्ठति

ज्वालमालाकुलम भाती विश्वस्यायतनम महत
सन्ततग्म शिलाभिस्तु लम्बत्याकोश सन्निभम
तस्यान्ते सुशीरग्म सूक्श्मम तस्मिन सर्वम प्रतिथिश्टितम
तस्य मध्ये महान अग्निर्विश्वार्चि र्विश्वतोमुख:
सोङ्ग भुग्वि भजन्तिश्ठ-न्नाहारमजर: कवि:
तिर्यगूर्ध्व मध: शायी रश्मयस्तस्य सन्तता
सन्तापयति स्वम देहमापाद तल मस्तक:
तस्य मध्ये वह्निशिखा अणीयोर्ध्वा व्यवस्थित:
नीलतो - यदमध्यस्था द्विघुल्लेखेव भास्वरा
नीवार शूक वत्तन्वी पीता भास्वत्यणूपमा
तस्या: शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थित:
स ब्रह्म स शिव: स हरि: सेन्द्र: सो~क्शर: परम: स्वराट ॥
णारायन शूक्तम ऎन्ग व१
२
रुतग्म सत्यम परम ब्रह्म पुरुशम क्रुश्णपिन्गळम
ऊर्ध्वरेतम विरूपाक्शम विश्वरूपाय वै नमो नम: ॥
ओम नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि
तन्नो विश्णु: प्रचोदयात ॥
ओम्म शान्ति: शान्ति: शान्ति: